Scanned by CamScanner

© लेखक

ISBN : 978-81-942948-8-7

प्रकाशक
साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेवसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : वहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (विहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 200/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 10/- (अन्य देश)

RAMCHARITMANAS MEIN RAM KE VIVIDH ROOP
Edited by Dr. Vijendra Pratap Singh

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Scanned with CamScanner

संपादकीय

भारत सामासिक संस्कृति का अनुपम उदाहरण है। किसी भी समाज विशेष के संगठित और सभ्य स्वरूप का निर्माण सदियों से प्रवाहित होती सांस्कृतिक धारा की अविरलता का परिणाम होता है तथा सम्पूर्ण समाज में किसी एक व्यक्ति की संस्कृति उससे सम्पृक्त विशेष मानव समूह या वर्ग पर आधारित होती है। मानव समूह या विभिन्न वर्गों का आधार संवंधित समाज की संस्कृति होती है। सामाजिक संगठना एवं एकीकरण की प्रक्रिया में सांस्कृतिक वंधनों की सृजना करने वाले तत्वों में सूक्ष्म कलाओं का विशेष स्थान होता है। प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे पात्र होते हैं जिनका महत्व ऐतिहासिक हो जाता है और वे पात्र सामान्य श्रेणी से उठकर जनमानस के पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक वैशिष्ट्य का आधार वनते हैं। साहित्य सृजन किसी व्यक्ति विशेष के व्यक्तिगत स्तर से प्रारंभ होकर धीरे-धीरे विस्तार को प्राप्त होता है और शनैः शनैः वह समाज की सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे समाज की सर्वांगीण सांस्कृतिक जागृति का साधन तो माना ही जाता है वल्कि वह समाज के निर्माण में भावात्मक एकता के सुदृढ़ीकरण का प्रमुख घटक भी वनता है।

भारतीय समाज में रामकथा की जड़े वैदिक काल से प्रारंभ होती हैं और संस्कृत साहित्य इसके तने के रूप में कार्यरत रहा तथा पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा अन्य भारतीय भाषाएं यथा तेलुगु, तमिल, ओड़या इत्यादि को इसकी शाखा एवं प्रशाखाएं माना जा सकता है। धार्मिक साहित्य में वाल्मीकी रामायण को रामकथा की प्राचीनतम उपलब्धि माना जाता है। यह भारत एक महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक महाकाव्य है जिसकी कथावस्तु, उसके नायक, नायिका एवं अन्य पात्र भारतीय समाज की सवसे लघु इकाई व्यक्ति से लेकर व हद संकल्पनात्मक समाज तक सर्वांगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। समाज का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जिसका आदर्श रूप प्राप्त न होता हो, यथा-आदर्श पिता-माता, आदर्श पति-पत्नी, आदर्श राजा, आदर्श भाई, आदर्श मित्र आदि का स्थापना इस महाकाव्य की विशेषता है। राम, सीता, भरत, लक्ष्मण, दशरथ के चरित्र भारतीय जनमानस में सांस्कृतिक आदर्शों के उज्जवलतम प्रतीक रहे हैं।

Scanned by CamScanner

13. मर्यादा एवं आदर्श के परिप्रेक्ष्य में राम
दीपक कुमार 90
14. 'रामचरितमानस' में जाति-भेद एवं वर्ण-व्यवस्था
मुकेश चंद 96
15. वर्तमान परिदृश्य में श्रीरामचरितमानस की प्रासंगिकता
सिम्मी गुप्ता
डॉ. प्रवीण कुमार तिवारी 111
16. तुलसीकृत रामचरितमानस में औदात्य विवेचन
सुधीर कुमार अवस्थी 118
17. मर्यादा और आदर्श के परिप्रेक्ष्य में राम
एस. राजलक्ष्मी 128
18. निराला और राम की शक्ति-पूजा
शक्ति सिंह 133
19. रामचरितमानस का वैज्ञानिक दृष्टिकोण
अंजू राय 139
20. लोकगाथा-रामचरितमानस लोकमानस की महागाथा-रामचरितमानस 146
डॉ. ब्रजेश कुमार शर्मा
21. वर्तमान समय और रामचरितमानस
तन्नू शर्मा 155
22. सामाजिक संदर्भ में तुलसीदास और रामचरितमानस
नैन सिंह 160

Scanned with CamScanner
Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

मर्यादा और आदर्श के परिप्रेक्ष्य में राम

एस. राजलक्ष्मी
सहायक प्राध्यापिका, लोयोला महाविद्यालय

श्रीराम विश्व को श्रेष्ठ जीवन का मार्गदर्शन देने वाले व्यक्तित्व हैं। राम हिंदुस्तान की सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं। राम के जीवन काल एवं पराक्रम महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत महाकाव्य रामायण के रूप में लिखा गया है। तत्पश्चात तुलसीदास ने भी भक्ति काव्य श्रीरामचरितमानस की रचना कर राम आदर्श पुरुष बताया है। राम का पूरा जीवन आदर्शों-मर्यादाओं और संघर्षों से भरा पड़ा है। राम सिर्फ एक आदर्श पुत्र ही नहीं, आदर्श पति और आदर्श भाई भी थे श्रेष्ठ राजा भी। जो व्यक्ति संयमित, मर्यादित और संस्कारित जीवन जीता है निस्वार्थ भाव से उसी में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों की झलक परिलक्षित होता है। त्रेता युग में भगवान श्रीराम से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं उनसे उत्तम कोई व्यक्तित्व नहीं। संपूर्ण भारतीय समाज के लिए एक म्मान आदर्श के रूप में भगवान श्रीराम को संपूर्ण जनमानस में स्वीकारा है, उनके तेजस्वी एवं पराक्रमी स्वरूप भारत की एकता की प्रत्यक्ष पहचान है। राम के जीवन से आदर्श ही नहीं बल्कि कर्म, त्याग और भक्ति का समावेश का उनके जीवन से परिचय मिलता है। राम ने जीवन में उच्च-से-उच्चतम स्तर पर अपने कर्तव्य और जिम्मेदारी को बखूबी निभाया है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त साकेत महाकाव्य में राम के चरित्र को ही कवि बनने का मूल आधार बताते हैं। राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है। श्रीरामजी के जीवन के आदर्श से हमें भेदभाव, अन्याय, असत्य का विरोध करने का और धर्म और सत्य की स्थापना करने का संदेश मिलता है। जीवन में आदर्श का निर्माण एक बहुत लंबी प्रक्रिया है। इसे सँभालने में हमें काफी परिस्थितियों से संघर्ष करना पड़ता है, इसी से उसके जीवन-मूल्य की दशा तय होती है। विपरीत परिस्थितियों में ही आदर्श की पहचान होती है। वाल्मीकि ने रामायण में भगवान श्रीराम के ऐसे 16 गुण को बताए हैं जो आज भी नेतृत्व क्षमता बढ़ाने व किसी भी क्षेत्र में अग्रसर करने के

Scanned with CamScanner

अहम् सूत्र माने जाते हैं। वे हैं : गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्य, दृढ़ -प्रतिज्ञ, सदाचारी, सभी प्राणियों का रक्षक, विद्वान, सामर्थ्यशील, प्रियदर्शन, मन पर अधिकार रखने वाला, क्रोध जीतने वाला, कांतिमान, निंदा ना करने वाला।

राम विषम परिस्थिति में भी नीतिसम्मत रहे। उन्होंने वेदों और मर्यादा का पालन करते हुए सुखी राज्य की स्थापना की, स्वयं की भावनाओं से समझौता कर न्याय और सत्य का साथ दिया, फिर चाहे राज्य त्यागने, वालि का वध करने, रावण का संहार करने या सीता को वन भेजने की स्थिति। तमाम प्रतिकूलताओं के बीच भी सर्वहित को प्राथमिकता देनेवाले कार्य ही आदर्श की श्रेणी में आते हैं। जीवन-मूल्य, परिस्थितियाँ समय के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं आध्यात्मिक दृष्टि से सेवा, दया, त्याग और सहनशीलता जीवन-मूल्य जाने जाते हैं। घर में मिले संस्कार काफी हद तक व्यक्ति के जीवन से जुड़ा रहता है। सत्य को जीवन का सबसे बड़ा आदर्श माना गया है, क्योंकि ताकत और सुख के एहसास में इसके साथ रहते हैं, सत्यता के वगैर जीवन के उच्च आदर्श पूरा नहीं होता। सच्चाई के बगैर जब मनुष्य झूठ फरेब का सहारा लेने लगता है तब उससे समय-समय पर अपराध बोध और अपमान के दौर से गुजरना पड़ता है। श्रीराम ने अपने जीवन काल में माता, पिता, गुरु, भाई, मित्र और समाज के प्रति प्रेम आधार से सहयोग, सहानुभूति और उदारता की जो परिभाषा अपने व्यवहार और विचारों से दी है वो वर्तमान परिस्थिति में भी प्रासंगिक हैं।

संतान : माँ-बाप की जिम्मेदारी है संतान की परवरिश बखूबी करें, श्रेष्ठ संतान की भी जिम्मेदारी है वे अपने माता-पिता के प्रति जिम्मेदारी और उनके उच्च आदर्श उनको आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाएँ, अपने आदर्श और व्यवहार से। श्रीराम अपने माता-पिता के प्रति अपार श्रद्धा रखे, विमाता होने पर भी कैकेई के प्रिय पुत्र थे। पर जब कैकेई ने राजा दशरथ से राम के लिए 14 वर्ष का वनवास माँगा था और भरत के लिए राज्य शासन की माँग की थी, इससे राम थोड़ा भी विचलित नहीं होते हैं। वे अपने माता सदृश कैकेई के प्रति अपार श्रद्धा रखते हैं वे कहते हैं–

सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी।
जो पितु मातु वचन अनुरागी।
कन्हैया मातृ पितृ दोष निहारा।
दुर्लभ जननी सकल संसारा।।

राम पुत्र के मर्यादा अनुसार अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। राम के लिए माता-पिता देव तुल्य हैं, इसलिए उनके द्वारा कही गई हर बात का पालन करते हैं।